व्यंग्य जब बाइडेन ने इमरान खान को फोन लगाया

सुंदर गुर्जर

जो बाइडेन को जैसे ही पता चला कि अमेरिका ने 200 साल भारत पर राज किया है, उसकी बेचैनी बढ़ गई। उसने सोचा साला सुबह से हाथ में खुजली भी चल रही थी। उसने पूरा मंत्रिमंडल इकठ्ठा किया और सबको लगा दिया कि जो भी हो जाये, मुझे कोहिनूर चाहिए ।

मंत्रिमंडल ने व्हाइट हाउस की दीवारें खोद दी, फर्श फाड़ दिए पर कुछ हाथ नहीं लगा। परेशान बाइडेन का दिमाग चला उसने इमरान खान को फोन लगाया।

हलो हाँ इमरान बोल रहा हूँ, मैं बाइडेन।

हाँ बाइडेन, भाईजान बोलो।

इमरान सुना है, आजकल भूखे मर रहे हो।

कया भाईजान आप भी...किसने बोला आपको?

अरे वो कमला हैरिस कल जी टीवी देख रही थी, तब पता चला ।

ये बताने के लिए फोन लगाया था क्या?

नहीं यार, एक गंभीर मामला है। तू बता क्या कि कभी अमेरिका ने भारत पर 200 साल राज किया था?

भाईजान, मुझे तो नहीं पता। पर एक अल्लाह बक्श चाचा हैं, वो उस वक्त उधर ही थे।

मैं बात करता हूँ आप फोन काटो।

अबे भुखमरे तेरे पास दूसरा फोन नही हैं क्या? वो जिओ की सिम होगी ना तेरे पास।

भाईजान वो हमारे यहाँ नही है।

तो अडानी को बोल उसकी शक्कर तो आती है ना तुम्हारे यहां, बोरी में भरकर दो, चार सिम भेज देगा।

ठीक है मेरे बाप, लगाता हूं।

बक्श चाचा से बात हुई और चाचा ने इधर आडवाणी को फोन लगाया ।

हाँ लालचंद - अबे मुल्ले तू...मेरा नंबर कहाँ से मिला ?

और तू मेरा नाम कब ठीक से लेगा, जिस दिन तू अल्लाह बक्श बोलेगा उस दिन मैं भी कृष्ण लगा दूंगा ।

छोड़ बता, क्यों फोन किया ?

यार ये अमेरिका ने भारत पर 200 साल राज किया था क्या?

मेरा भेजा मत खा, मेरी पहले ही लगी पड़ी है। यह बोल कर आडवाणी ने फोन पटक दिया।

अल्लाह बक्श भी मन में बड़बड़ाया -और चूम जिन्ना की मजार, अब भुगत तू भी।

चाचा ने इमरान से कहा-नहीं भाई, नहीं पता चला। उधर बाइडेन फोन पर ही था, इमरान ने बाइडेन से कहा, भाईजान आप मोदी जी को फोन लगाओ वो अच्छे आदमी हैं, शायद उनको पता हो ।

तेरे लिए वो अच्छे कब से हो गए?

नहीं, भाईजान वो अच्छे हैं। अभी उन्होंने 11 सो करोड़ के वैक्सीन भेजे। मैंने भी लगवाया। फोटो भी खिंचवाया। उसके बाद जब मुझे कोरोना हुआ, तो हाल-चाल भी जाना। वो तो एक बार बांग्लादेश के ऊपर से जा रहे थे और बिरयानी की खुशबू आई, वैसे ही ड्राइवर को बोला भाई पाकिस्तान ले ले। वो आये बिरयानी खाई। हमने भी उनकी अम्मी के लिए जरी गोटे वाली साड़ी दी ।

अच्छा ये बता, बिरयानी वेज थी या नॉनवेज?

अरे उस वक्त शरीफ भाई थे, मैं नहीं था। पर मोदी भाईजान आदमी अच्छे हैं। उनकी पार्टी का मंत्री बीफ खाता है, पर उसको कभी पार्टी से नही निकाला। अब ये खाते हैं कि नहीं मुझे नहीं पता ।

अच्छा नंबर दे उनका।

भाईजान, वो नंबर तो पुराने फोन में था। वो अभी बाजवा के पास जब्त है।

ठीक है। उधर बाइडेन ने नेट खोला नंबर निकालने को जैसे ही मोदी टाइप किया उधर लिखा आया - झूठा है झूठा है । परेशान बाइडेन ने सीधे ब्रिटेन में फोन मिलाया और पूछा महारानी ये बताओ क्या कभी अमेरिका ने भारत पर 200 साल राज किया है ? महारानी बोली - क्या ये बात किसी चड्डी ने कही है ?

बाइडेन हतप्रभ हो पूछा, आपको कैसे पता?

अरे वो चड्डी झूठे हैं। पेंशन पाने के लिए झूठ बोलते हैं। फिर माफी मांग लेते हैं।

और हां, आज के बाद इधर फोन मत लगाना ।

परेशान बाइडेन ने डॉक्टर को बुलाया और बताया ये मेरे हाथ में खुजली क्यों चल रही है?

डॉक्टर- क्या अभी कहीं किसी को उंगली की है क्या?

हां, वो अभी पुतिन से थोड़ी झड़प हो गई थी ।

तो ये उसी की खुजली ये एक प्रकार की एलर्जी है। ये दो एविल दे रहा हूं। खा कर सो जाओ। और अभी आये हुए चार दिन ही हुए हैं, इधर उधर उंगली करना बंद करो। बाइडेन ने गोली ली और भद्दी सी गाली दी-स्साले चड्डियों ने व्हाइट हाउस खुदवा दिया ।

श्रम अन्य देशों में भी श्रमिक असन्तोष पनप रहा था

सतीश कुमार

करीब एक सप्ताह ब्रिटेन में रहने के बाद मुझे बेल्जियम के शहर गेन्ट ले जाया गया, जहां एक सप्ताह तक चली कॉन्फ्रेंस में लगभग तमाम पश्चिमी यूरोप के मज़दूर प्रतिनिधियों के अलावा लैटिन अमेरिकी देशों के अलावा पाकिस्तान व श्रीलंका तक के प्रतिनिधियों ने भाग लिया। रहने के लिये वहां की एक यूनिवर्सिटी का हॉस्टल बुक कर लिया गया था। बेल्जियम जाने के लिये वैसे तो फैरी (नौका) द्वारा जाने की योजना थी, परन्तु हड़ताल के चलते वायुयान से जाना पड़ा। फैरी का मतलब कोई छोटी-मोटी नौका नहीं होता, यह एक अच्छा-खासा जहाज होता है जिसके तल में सैकड़ों छोटे-बड़े वाहनों के साथ-साथ पूरी ट्रेन ही समा जाती है और ऊपरी मंजिलों में सैकड़ों यात्री होते हैं जिनके लिये सिनेमा हॉल, रेस्तरां आदि अनेकों सुविधायें होती हैं।

गेन्ट पहुंचने पर अभी वहां की भोजन व्यवस्था नहीं हुई थी, इसलिये मुझे मेरे मेजबानों ने करीब दस हजार गिल्डर देते हुए कहा कि किसी रेस्तरां में नाश्ता कर आओ। मैं हैरान, दस हज़ार गिल्डर का क्या करूंगा? मुझे बताया गया कि यह बहुत हल्की करेंसी है, बाज़ार में जाकर तो देखें। थोड़ा-सा नाश्ता करने पर बिल देखा तो करीब-करीब सारे गिल्डर खर्च हो गये। यह रकम शायद दो ब्रिटिश पाऊंड के बराबर रही होगी। कॉन्फ्रें स में पाकिस्तान से आये लोगों के अलावा विभिन्न यूरोपीय देशों से आये प्रतिनिधियों में भी पाकिस्तानी मूल के लोग थे। इन लोगों को मैंने अपने सबसे नजदीक पाया, खासकर उनको जो पाकिस्तानी पंजाब के इलाके से थे। उनकी और हमारी बोल-चाल की भाषा, खान-पान व संस्कृति आदि सब कुछ अपना सा लगता था। वे कहीं से भी दुश्मन नज़र नहीं आते थे। उनसे बात-चीत में उनका दुख-दर्द सामने आया। वे कहते थे 'सानू तां खा गयी फ़ौज ते मुल्लें' यानी हमारे देश को फ़ौज और धर्मांधता खा गयी।

पाकिस्तानी दोस्तों ने बताया कि किस तरह से वहां मज़दूरों, किसानों व तमाम मेहनतकश जनता का शोषण हो रहा है। विरोध की जरा सी आवाज़ को कुचल डालने के लिये फ़ौजी शासन-प्रशासन टूट पड़ता है। इसी के चलते बड़ी संख्या में पाकिस्तानी नौजवान अन्य देशों में शरण लेकर संगठन बनाये हुए थे। इन्हीं संगठनों के माध्यम से ये लोग अपने देशवासियों के लिये संघर्ष की अलख जगाये हुए थे। इन्हीं नौजवानों में मुझे मिले डॉ. तनवीर गोंदल। ये मुल्तान मेडिकल कॉलेज में एमबीबीएस की पढाई कर रहे थे। इनके राजनीतिक विचारों से तत्कालीन जनरल ज़िया-उल-हक की सरकार काफ़ी परेशान रहती थी। उस वक्त तो सरकार के सब्र का पैमाना छलक उठा जब मेडिकल कॉलेज के वार्षिक उत्सव में मौजूद अनेकों फ़ौजी जरनैलों की मौजूदगी में उन्होंने क्रान्तिकारी नज़्म कह डाली। फ़िर क्या था, फ़ौज और पुलिस उनके पीछे-पीछे और वे आगे-आगे। देखते ही गोली मार देने के आदेश हुए। जैसे-तैसे वहां से निकल कर नीदरलैंड में शरण ली, वहां के एक मेडिकल कॉलेज से डॉक्टरी की पढ़ाई पूरी करके, डॉक्टरी करने की बजाय क्रांतिकारी संगठन बनाने में जुट गये। कुल मिलाकर पाकिस्तानी मेहनतकश वर्ग की दुर्दशा हम जैसी ही रही है, लेकिन वहां आन्दोलन करने की परिस्थितियां हमारे यहां से भी कहीं ज्यादा कठिन हैं, उसके बावजूद वहां संघर्ष जारी है।

यूं तो यह कॉन्फ्रेंस मार्क्स, लेनिन तथा ट्राट्स्की की साम्यवादी क्रान्ति के सिद्धांतों पर बहस करने व उसे आगे बढ़ाने को लेकर थी; जाहिर है इस तरह की कॉन्फ्रेंस में शामिल होने वाले मेहनतकश वर्ग के लोग ही होंगे जो मेहनत की लूट के विरोध में संघर्षरत रहे हों। मैंने भी अपने तौर पर विभिन्न देशों से आये प्रतिनिधियों से उनके यहां के हालात पर अलग से काफ़ी चर्चा की तो पाया कि एक भी देश ऐसा नहीं था, जहां के मेहनतकश मज़दूर व किसान अपने यहां की पूंजीवादी व्यवस्था से संतुष्ट हों। ऊपरी तौर पर देखने में भले ही पश्चिमी देशों के मज़दूर काफ़ी सम्पन्न नज़र आते हैं, उनके पास कार भी है, रहने को बेहतर मकान है, चिकित्सा व शिक्षा की बेहतर सुविधायें उपलब्ध हैं, लेकिन यह बेहतरी केवल हमारे यहां के लोगों से ही बेहतर है, जबकि वे अपने यहां के उन समृद्ध लोगों से मुकाबला करते हैं जो शोषण के जरिये अत्यधिक सुख-सुविधाओं का उपभोग कर रहे हैं।

वहां के मेहनतकशों की अपेक्षाकृत बेहतर स्थिति को देखते हुए भारत, पाकिस्तान जैसे ग़रीब देशों के मेहनतकश जैसे-तैसे कानूनी या गैर कानूनी ढंग से उन देशों में प्रवेश करके अपनी मेहनत के कुछ बेहतर दाम प्राप्त करने का प्रयास करते हैं। जाहिर है, इससे वहां के मज़दूरों की सौदेबाज़ी की क्षमता कमज़ोर होती है, यानी जब अवैध रूप से घुसे मज़दूर सस्ते में काम करने को उपलब्ध हों तो वे अपने यहां के महंगे मज़दूर क्यों रखेंगे? जाहिर है, अवैध अप्रवासी मज़दूर स्थानीय मज़दूरों को अपने दुश्मन जैसे नज़र आयेंगे ही। इसी को देखते हुए वीज़ा के कड़े नियम लागू किये जाते हैं। मुझे बड़ा अजीब लगा जब 'दुनिया भर के मज़दूर एक हो' और 'मज़दूर-मज़दूर भाई-भाई' के नारों के विपरीत एक मज़दूर को दूसरा मज़दूर दुश्मन नज़र आता है। यह स्थिति हमारे देश में भी होती है। जब मज़दूर हड़ताल पर जाते हैं तो बेरोज़गार लोग सस्ते में भी काम करके हड़ताल को विफ़ल करने आ खड़े होते हैं। जाहिर है, ऐसे में मज़दूर का मज़दूर से टकराव होना स्वाभाविक है। यही टकराव मेहनतकशों के संघर्ष को कमज़ोर तथा पूंजीपतियों को मजबूती प्रदान करता है। इसीलिये पूंजीवादी व्यवस्था में बेरोजगारी का बने रहना जरूरी समझा गया है। इसके लिये मानव श्रम की जगह स्वचालित मशीनों का आविष्कार किया जाता है।

मुझे भी वहां बस चुके हिन्दुस्तानी व पाकिस्तानी, नये-नये बने दोस्तों ने सलाह देते हुए वहां बस जाने के रास्ते सुझाए। बड़े मासूम लहजे में वे कहते थे कि यहां आकर वापस कौन जाता है? उन्होंने इसके लिये मुझे तमाम तरह के जुगाड़ जुटा कर देने का भरोसा भी दिया। उस वक्त मेरा अविवाहित होना इस जुगाड़बाज़ी के लिये अत्यधिक उपयुक्त था। वहां की किसी महिला से 'असली-नकली' शादी करके वहां बस जाना काफ़ी आसान होता था। मैंने उनसे कहा कि यह जगह महीना दो महीना रहने घूमने-मिलने-जुलने आदि के लिये तो ठीक है; लेकिन स्थाई तौर पर दोयम दर्जे का नागरिक बनकर यहां रहना मेरे वश का नहीं। जो मजा अपने देश में रहकर अपने अधिकारों के लिये, अपने देश को बेहतर बनाने के लिये संघर्ष करने में है, वह मजा यहां के भौतिक सुखों में नहीं है।

पूर्वी यूरोपीय देशों, जहां उस वक्त साम्यवादी शासन प्रणाली थी, की स्थिति तो और भी बुरी थी। उन देशों के बारे में काफ़ी कुछ सुनने के बाद इच्छा हुई कि थोड़ा सा जायजा वहां का भी लिया जाय। इस वक्त तक मैं जर्मनी के कील शहर में आ चुका था और कहीं जाना तो सम्भव नहीं था, इसलिये बर्लिन शहर जाने का प्रोग्राम बनाया। उस वक्त आधा बर्लिन साम्यवादी पूर्वी जर्मनी के कब्जे में था और शेष पश्चिमी जर्मनी के नियंत्रण में। लेकिन वहां तक जाने का सैकड़ों किलो मीटर लम्बा हाईवे पूर्वी जर्मनी के क्षेत्र से होकर गुजरता था। जिसका निर्माण एवं देख-रेख का खर्चा पश्चिमी जर्मनी वहन करता था और सड़क पर वाहनों से, पुलिसिंग के नाम पर डॉलर के रूप में लूट की कमाई पूर्वी जर्मनी की पुलिस करती थी।

पूरे हाईवे पर कड़ी घेराबंदी थी ताकि कोई भी नागरिक वहां से किसी वाहन में सवार होकर पश्चिमी जर्मनी पलायन न कर जाय। बर्लिन पहुंचने के बाद अगले दिन हमने पूर्वी बर्लिन घूमने का प्रोग्राम बनाया।

वीजा की कोई कठिनाई नहीं थी, केवल प्रति व्यक्ति एक निश्चित फ़ीस के अलावा 20-20 डॉलर के बराबर उनकी करेंसी खरीदे। शहर को बांटने के लिये बर्लिन की ऐतिहासिक दीवार बनाई गई थी। उस पार आने-जाने के लिये रास्ता इतना कड़ाई से सुरक्षित किया गया था कि कोई पूर्वी जर्मनी से छिप-छिपा कर पलायन न कर सके।

(सम्पादक : मजदूर मोर्चा)